

होते oder भूमित उ^० *erhebt sich von der Erde* P. 5,4,45. Schol. उज्जि-
होषे वं न किं पुनः BHATT. 18, 27. पुरस्ताद्यतो रजः पार्थिवमुज्जिहोते
RAGH. 13, 64. उज्जिहाने सूर्यमपडले BHAG. P. 5,7,12. उज्जिहानमिवाडुपम्
10, 31, 1. NAISH. 22, 45. 55. कोलाकलो लोकस्योदज्जिहोत DAÇAK. 66, 3.
उज्जिहानजीविता deren Leben hinausfahren —; *entweichen will* MĀLA-
TIM. 163, 11. — 2) *in die Höhe richten*: अतिभुवमुज्जिहानः BHATT. 3, 47.
— Vgl. उज्जिहान.
— अत्युद् *sich erheben über*: शीर्षा यूपम् ÇAT. Br. 14, 2, 4, 14.
— अयुद् *sich aufmachen nach* TBr. 1, 7, 2, 2.
— अयुद् *mit Jmd sich erheben*: सर्वाणि ह वा इमानि भूतानि प्राणमे-
वाभिसंविशन्ति प्राणमभ्युज्जिहते KĪND. Up. 1, 11, 5.
— प्रोद् *hinauffahren, — schlagen* (Flammen): यद्वा इव प्र व्यापु-
ज्जिहानाः प्र भानवः सिद्धते RV. 5, 1, 1.
— प्रत्युद् *auffahren zu* (acc.): गिरः प्रति वामुदहासत RV. 1, 9, 4.
— समुद् *sich erheben so v. a. zum Vorschein kommen, erscheinen*:
उज्जिहान BHAG. P. 4, 20, 19. 8, 6, 13.
— उप *hinabfahren —, herabsteigen auf* (acc.): उपाज्जिहोया न मही-
तलं यदि ÇAT. 1, 37.
— नि *hinunterfahren, sich ducken*: नि जिहोत पर्वतो गिरिः RV. 1,
37, 7. 8, 7, 2. 34. 18, 2. Bäume 5, 37, 3. 60, 2. देवी स्वर्धितिः 32, 10. नि
वां ज्ञामयो जिहोता न्यज्ञामयो नि सपत्नाः (so zu lesen) ĀÇV. ÇR. 5, 7, 2.
ÇĀKH. Br. 28, 5. — *desid. sich ducken wollen*: वर्ष्मा रथस्य नि जिहोषते
दिवः AV. 20, 127, 2.
— निम् *herausfahren, emporsteigen*: निजिहानं दर्श सः । धूपधूमं व-
नसुष्टात्कालागुरुवनात् RĀGA-TAR. 4, 171.
— अनुनिम् *dass. (सहम्) स्तम्भस्य मध्यादनुनिजिहानम्* BHAG. P. 7, 8, 19.
— परा *ausweichen in* (acc.): अज्ञा पर्णा पराजिहोत TS. 5, 4, 2, 3.
— प्र *davon —, wegfahren*: रथीयत्तेव प्र जिहोत श्रोषधिः RV. 1,
166, 5. *losspringen*: तिर्यक्प्रजिहोत ÇAT. Br. 1, 7, 4, 12. = *प्रगच्छेत्*
Comm., es ist aber vielleicht *प्रयच्छेत्* zu lesen, nämlich *प्राशित्रम्*, also
darreichen; vgl. अतिप्र. — Vgl. प्रहा.
— अतिप्र *hiniiberreichen*: प्रतिप्रस्थात्रे ऽतिप्रजिहोति (प्राशित्रम्) ÇAT.
Br. 2, 5, 2, 40. उत्तरा वेदिमतिक्रमय्य तदिडापात्रं प्रगमयेत् Comm. Die
Bedeutung hier wie unter प्र fügt sich nicht zur Grundbedeutung un-
serer Wurzel.
— अभिप्र *hinauffahren*: अभिव स्वः प्रजिहोति ÇĀKH. ÇR. 12, 17, 4.
— चि *auseinanderweichen, sich aufthun, klaffen*: पर्वतः RV. 2, 23, 18.
5, 43, 3. चि जिहोष वनस्पते योनिः सूर्यह्या इव 5, 78, 5. AV. 5, 25, 9. 6,
121, 4. चि जिहोषा मा मा सं तप्तम् TS. 1, 1, 1, 1. ०हीयाम् ÇAT. Br. 14, 9, 4, 20.
8, 12, 1. Vgl. विहृ und 2. विहायस्. — *caus. öffnen, klaffen machen*: योनिम्
AV. 1, 11, 3. AIR. Br. 5, 15. ऊद् ÇAT. Br. 14, 9, 4, 20. शीर्षकपालम् 7, 5, 2, 25.
— सम् 1) *sich aufrichten, — aufraffen, aufstehen*: उत्संहायोस्थात्
RV. 2, 38, 4. सं सहेसे पुरुमायो जिहोति 3, 51, 4. ततः पुनर्न संहास्यते ÇAT.
Br. 1, 2, 4, 41. fgg. विह्वस्तेः पर्वभिर्न शशाक संहातुम् 6, 2, 36. 4, 2, 2, 11.
6, 4, 2. TS. 7, 1, 1, 3. AIR. Br. 7, 15. ĀÇV. GRH. 2, 3, 11. 13. KAUC. 10.
19. Nir. 3, 18. प्रातः संजिहानः KĪND. Up. 1, 10, 6. 5, 11, 5. 4, 1, 5. partic.
संहातुं VS. 22, 7. — 2) *sich umherbewegen*: यथा जले संजिहोते जलोक्तसः
BHAG. P. 10, 40, 15. — 3) *theilhaftig werden* (wie alle Verba der Bewe-

gung nach Comm.): समहास्त मुदम् NALOD. 1, 54. — Vgl. संहाय्यम् —
caus. संहायपति sich aufrichten machen KAUC. 80.
— परिस्म् *auffahren aus* (abl.): विद्युतो ज्योतिः परि संजिहानम् RV.
7, 33, 10.
— प्रतिस्म् *vor Jmd aufstehen* Gop. Br. 1, 2, 4.
2. हा, जैहाति DHĀTUP. 25, 8 (त्यागे). Vop. 10, 5. जह्तिस् (TBr. 1, 4,
6, 5) und जहोतस्, जह्यस् und जहोयस् P. 6, 4, 116. Vop. 9, 31. 10, 5.
जह्तिस् AV. 6, 26, 2. जहति Vop. 10, 5. partic. जहत्, जहती; जहात्
(nicht zu belegen), जहत्ति und जहत्ति P. 6, 4, 117. Vop. 10, 7. जह्यात्
P. 6, 4, 118. Vop. 10, 6. जहोतात् AV. 11, 1, 13. अजहताम् AIR. Br. 3,
26. अजहातम् RV. 8, 7, 31. अजहत्सुः जहोः; जह्तिम् BHAG. P. 10, 65, 11.
जह्त्सुः अहोतीत्, अहात् 2. und 3. sg. AV. PRĀT. 2, 46 (die Beispiele des
Comm. gehören zu 1. ह्). हास्; अहात् BHAG. P. 7, 5, 36. हासिष्ठ, हा-
सिषुस्; हास्यति, ep. auch जह्यति; अहास्यत्; ह्यात् P. 6, 4, 67. 118.
Vop. 8, 85. 10, 7. हातुम्; हिवा P. 7, 4, 43. Vop. 26, 211. auch हीवा.
ved. P. 7, 4, 44. हिली RV. 9, 69, 9. हिलीप 10, 14, 8. ०हाप P. 6, 4, 69.
Vop. 26, 212. 1) *lassen und zwar a) verlassen, im Stich lassen, dahin-*
ten —; b) von sich entfernen, verstossen; c) überlassen: die Arbeit RV.
2, 38, 6. वसना 1, 95, 7. वज्रिम् 9, 69, 9. 71, 2. अत्कम् 10, 95, 8. यूपम् AV.
5, 29, 15. भोजनानि RV. 7, 5, 3. 18, 15. यथा न पूर्वमपरे जहाति 10, 18,
5. die Götter lassen Indra im Stich 8, 7, 31. 85, 7. 4, 18, 11. AIR. Br. 3,
16. 20. अयमस्मान् वनस्पतिर्मा हाः RV. 3, 53, 20. अरातोः 4, 27, 2. AV. 2,
10, 7. अत्रेचतसः RV. 9, 64, 20. 10, 53, 8. 124, 2. कृशम् 8, 64, 8. जीर्णा व-
चम् AIR. Br. 6, 1. शयीणि RV. 9, 14, 4. 10, 17, 2. सेदिम् VS. 12, 105. सेमं
अज्ञीषोपाज्जिहान्मुत्युम् *von sich wegbringen* 19, 72. शरीरम् AV. 4, 11, 6.
6, 26, 2. 41, 3. 47, 2. 9, 4, 24. 10, 1, 32. 2, 30. 11, 3, 28. पुरैर्न जुरसः प्रापो
जहाति 56. 13, 1, 12. द्वेषासि 18, 2, 47. TS. 3, 2, 6, 4. ÇAT. Br. 6, 1, 2, 12.
6, 2, 2. 9, 1, 2, 12. नैनं वागजहाति 10, 3, 2, 1. बन्धनम् 13, 1, 6, 2. — (einen
Ort) *verlassen* MBH. 3, 12339. R. 1, 1, 39. 2, 21, 46. RAGH. 13, 59. 12, 24.
जहाति न पदवीं मृगस्ते ÇĀK. 89. 115. वं हूरमपि गच्छती हृदयं न ज-
हासि मे ÇĀK. Ch. 59, 6. जलं जहाद्भिः शिशिरं पाठीनैः RĀGA-TAR. 5, 65.
BHAG. P. 4, 28, 10. 7, 5, 5. आसनम् MBH. 1, 7722. R. 7, 62, 10. शय्याम्
RAGH. 5, 72. नावम् R. 2, 52, 87. यानानि 92, 14. Jmd verlassen, im Stich
lassen: पतिम् M. 5, 163. MBH. 2, 2604. 3, 2364. 16895. 6, 265. 12, 4261.
R. 2, 40, 24. 52, 53. 66, 20. R. GORR. 2, 30, 35. 38, 40. MRĀKH. 102, 13.
RAGH. 8, 51. 14, 61. 87. ÇĀK. 115. Spr. (II) 178. 3752. 4060. KATHĀS. 17,
156. BRAHMA-P. in LA. (III) 55, 10. RĀGA-TAR. 2, 164. BHAG. P. 10, 65, 11.
BHATT. 5, 91. von einem unpersönlichen Subject: तेनायुर्न जहाति माम्
MBH. 2, 2605. अपि वा विपुला लक्ष्मीर्न जह्यात् R. 3, 41, 7. तस्य देहम् —
जहौ न लक्ष्मीर्न प्रापो न तेजो न पराक्रमः 4, 16, 4. R. ed. Bomb. 6, 46,
39 (med. हास्यते des Metrums wegen). तं प्राणाः काङ्क्षितापगमा जहूः (so
mit der ed. Calc. zu lesen) RĀGA-TAR. 4, 654. किमात्मनानेन जहाति यो
ऽत्ततः BHAG. P. 8, 22, 9. सा मां स्मृतिर्नो जहाति 5, 12, 15. 7, 7, 6. (den
Leib) *verlassen* so v. a. *sterben* MAITRĀUP. 4, 1. ÇVETĀÇV. Up. 5, 14. Spr.
(II) 1167. RĀGA-TAR. 1, 317. 3, 430. 6, 49. BHAG. P. 1, 12, 28. 13, 24. 54.
15, 35. 7, 10, 36. जीवितम् MBH. 4, 649. 14, 857. RĀGA-TAR. 4, 324. प्रा-
णान् MBH. 5, 7224 (अजहात् mit der ed. Bomb. zu lesen). 7, 274. R. 2,
63, 50. अमूनं Suçr. 1, 255, 3. KATHĀS. 33, 15. RĀGA-TAR. 6, 54. BHAG. P.